सम्पादक के नाम

अलीगढ़ मुस्लिम विश्व विद्यालय में लगे जिन्ना के चित्र को श्रद्धा का नहीं, अपितु इतिहास का विषय मानना चाहिए ।

इस विश्व विद्यालय की स्थापना सर सैयद अहमद खां ने की थी , जो भले ही अंग्रेजों के हिमायती थे , पर मुस्लिमों में आधुनिक शिक्षा के प्रबल पक्षधर भी थे । इस लिहाज से उनका दृष्टिकोण रूढ़िवादी मौलवियोंसे भिन्न था ।

जिन्ना का यह चित्र आज कल नहीं लगा , बल्कि 1938 में लग चुका था । जबकि इससे पहले इसी विश्व विद्यालय में महात्मा गांधी का चित्र लग चुका था , जो आज भी है ।

जिन्ना अकस्मात एवं परिस्थिति वश मुस्लिमों का धर्म ध्वजी बना । अन्यथा वह पाश्चात्य रहन सहन का आदी एक वकील था , और ऐसी चीजें खाता पीता था , जिनका नाम सुन कर ही धर्म ग्राही मुस्लिमों को कै आने लगती है । भारत की राजनीति में अनफिट होकर वह लन्दन जा बसा था । क्योंकि उसे न हिंदी आती थी और न उर्दू । उसे लन्दन से कई साल बाद शायर इक़बाल भारत वापस लाये , क्योंकि तब तक द्विराष्ट्र बाद का सिद्धान्त जन्म ले चुका था , और एक मुस्लिम राष्ट्र की पैरवी के लिए जिन्ना जैसे कानून जानने वाले और कुतर्क करने वाले वकील की ज़रूरत थी ।

द्वितीय विश्व युद्ध के उपरांत जब राज्यों में सरकारों का गठन हुआ , तो बंगाल में उसकी पार्टी मुस्लिम लीग के साथ हिन्दू महा सभा भी सरकार में साझीदार थी । क्योंकि दोनों देश को तोड़ने में विश्वास रखते थे , और आज भी रखते हैं ।

वह अपने गुजराती सम प्रदेशीय गांधी से बहुत द्वेष रखता था , और उन्हें चिढ़ाता था । उनके सामने वार्ता के लिए बुलाई गई बैठकों में सिगरेट फूंकता रहता था , और उनकी बकरी की ओर ललचाई बुरी नज़रों से देखता था । फिर भी गांधी उसकी क्षुद्रताओं को बर्दाश्त करते थे , और उसे क़ायदे आज़म की संज्ञा उन्हीने दी थी ।

गांधी ने देश विभाजन रोकने का भरसक प्रयत्न किया , लेकिन जब जिन्ना ने गृह युद्ध की धमकी दी तो वह मन मसोस कर रह गए ।

पाकिस्तान बनने के बाद वह तत्काल धर्म निरपेक्ष बन गया , जो असल मे वह था भी । पाकिस्तान के राष्ट्राध्यक्ष के रूप में दिए गए अपने पहले भाषण से ही वह वहां के कट्टरपंथियों की किरकिरी बन गया , क्योंकि उसने कहा था कि इस देश मे हर धर्मावलंवी को अपना धर्म मानने की छूट है । इसके कुछ ही समय बाद वह ह्रड्ड से मर गया । अगर न मरता , तो मुस्लिम कट्टर पंथी उसे मारने वाले थे , जैसा कि भारत में हिन्दू कट्टरपंथियों ने गांधी को मारा ।

जब वह मरने वाला था , और उसकी बहन उसे कराची से इस्लामाबाद लायी , तो हवाई अड्डे पर उसे रिसीव करने वाला कोई न था । यही नहीं , उसे वहां से हॉस्पिटल तक लाने के लिए एक खटारा एम्बुलेंस भेजी गई , जो रास्ते मे खराब हो गयी , और जिन्ना उसमे तड़पता रहा ।

वह अपने अंतिम दिनों में देश विभाजन की अपनी भूल को महसूस करने लगा था , साथ ही यह भी कि वह अपने लाखों धर्म बन्धु मुस्लिमों की हत्या का उत्तरदायी है । आज भारतीय उप महाद्वीप में मुस्लिम जिन्ना की वजह से ही अब तक आक्रांत हैं । आज देश विभाजित न होता , तो भारत विश्व का नम्बर 1 मुल्क़ होता ।

बहरहाल । जिन्ना की तसवीर हमारा क्या बिगाड़ेगी , जब जिन्ना खुद कुछ न बिगाड़ पाया । उसकी तस्वीर लगी रहने दो । वह भारतीय मुसलमानों का आदर्श कभी नहीं रहा , कभी नहीं रहेगा । समय समय पर इतिहास का तापमान परखने के लिए उसकी तस्वीर ज़रूरी है ।

- राजीव नयन बहुगुणा

संघ के स्वदेशी रामदेव का अंत

हिंदुत्व के बाजार मॉडल बाबा रामदेव हैं।बाबरी मस्जिद विध्वंस के बाद उनके पीछे हिंदुत्व की भीड़ को लामबंद किया गया, उसके बिजनेस फल मिले ,योग के झूठ को जमकर बेचा गया।चंद वर्षों में पतंजलि ब्रॉण्ड और बालकृष्ण का नाम सबसे अमीरों में आ गया।

आज बाबा का झूठ और नकली हिन्दू राष्ट्रवाद उजागर हो गया है, वे अपने घुटने का ऑपरेशन कराने लंदन जा रहे हैं।यह खबर अपने आपमें दो संदेश देती है,पहला,देश में हड्डी के इलाज की बेहतरीन व्यवस्था नहीं है,दूसरा, पतंजलि की दवाएं और योग से रोग निवारण के सभी दावे गलत हैं। प्रकारान्तर से यह हिंदुत्व के योग संबंधी असत्य का उद्घाटन भी है। इसे आरएसएस के बनाए असत्य के महाख्यान के अंत की शुरुआत के रुप में देखा जाना चाहिए।

आरएसएस के तीन महाख्यान हैं,पहला, राममंदिर,दूसरा, बाबा रामदेव,तीसरा, पाकिस्तान। राममंदिर के झूठ के उद्घाटन का चरम चल रहा है, सुप्रीमकोर्ट में विचार हो रहा है, उम्मीद है झूठ नंगा होगा। इस बीच बाबा रामदेव का झूठ नंगा हो चुका है, पाकिस्तान के खिलाफ जो असहयोग और दूरी का महाख्यान रचा गया वह शंघाई सैन्य गठबंधन ने नंगा कर दिया है, भारत-पाक की सेनाएं मिलकर अन्य देशों के साथ युद्धाभ्यास करेंगी,यह मोदी -आरएसएस की सारी पाक विरोधी भावनाओं के खिलाफ है।

- जगदीश्वर चतुर्वेदी

जिन्ना, भारत के मुसलमानों का सबसे बड़ा गुनहगार

आज़ादी के पहले से ही जिन्ना भारत में जवाहरलाल नेहरू के बराबर की हैसियत रखते थे , उनसे अधिक शिक्षित थे और उस समय अंग्रेज़ी हुकूमत से लेकर भारत की अंदरूनी राजनीति में नेहरू से अधिक पकड़ रखते थे , गाँधी जी को जवाहर लाल नेहरू जितने प्रिय भी थे।

स्वतंत्र भारत में मुसलमानों को उनका हक दिलाने के लिए वह दलितों के लिए बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर से अधिक कुछ कर सकते थे , संविधान में जैसे दलितों को तमाम अधिकार दिए गये वैसे ही या उससे अधिक अधिकार मुहम्मद अली जिन्ना भारत के मुसलमानों को दिला सकते थे।

परन्तु यह सब ना करके उन्होंने नेहरू-पटेल की साजिश में शामिल होकर देश तोड़ा और भारत के मुसलमानों को कयामत तक पाकिस्तान के नाम पर गाली और लाठी खाने की वजह दे गये।

यकीं मानिये कि यदि आज पाकिस्तान ना होता तो इस देश में ना भगवा आतंकी होते ना इस देश में मुसलमान नौकरी के 33त्न की भागीदारी से पर आ जाते।

मैं इस देश के मुसलमानों के इन सब कारणों का सबसे बड़ा गुनहगार मुहम्मद अली जिन्ना को मानता हूं , वह इस देश के मुसलमानों के सबसे बड़े खलनायक हैं।

और आज देखिए कि देश के मुसलमानों को उनके नाम पर ही लाठी मारी जा रही है।

मुहम्मद अली जिन्ना के लिए इस देश के मुसलमानों के दिल में कोई जगह नहीं है परन्तु अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में लगी उनके एक चित्र पर जिस तरह केवल राजनैतिक उद्देश्य से भगवा आतंकी उत्पात मचाए हुए हैं यह जिन्ना को इस देश के देशभक्त मुसलमानों से जोड़ने के प्रयास मात्र से अधिक कुछ नहीं।

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के जिन्ना संस्थापक सदस्य थे , अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के छात्र संघ ने उनको सदैव के लिए सदस्यता प्रदान की थी , इस कारण 1938 से लगी उनकी एक तस्वीर को मुद्दा बना कर जिस तरह पुर्व राष्ट्रपति हामिद अंसारी पर हिंसक आक्रमण किया गया वह निंदनीय है।

खैर , हामिद अंसारी और उनकी पत्नी सलमा अंसारी ने भी अपने कार्यकाल में बहुत पूजापाठ की और फोटो खिंचाई , उनको कल कुछ एहसास अवश्य हो गया होगा , जब वह जिस पद पर थे तब चुप थे , दलितों की तरह उस पद पर बैठ कर देश के मुसलमानों के सवालों पर बोलते तो उनको दुनिया सुनती पर वह चुप थे , सपरिवार आरती उतार रहे थे , पूजा कराती फोटो खिंचा रहे थे। जिन्ना इस देश के इतिहास हैं , इस देश और मुसलमानों के खलनायक हैं , इसके बावजूद इस देश में जिन्ना की तस्वीर केवल अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में ही नहीं मिलेगी , लाखों लाख किताबों और संग्रहालयों में मिलेगी तो क्या इन सब पर भी भगवा गुंडे आतंक मचाएंगे ? और मुंबई स्थित "जिन्ना हाउस" का क्या जिस पर सरकार देश की जनता की कमाई उसके रखरखाव में खर्च कर रही है ? माफ कीजिएगा , इस देश को हिन्दू-मुस्लिम दो राष्ट्र कहने वाला जिन्ना से पहले माफीवीर सावरकर था , जो अंग्रेजों से माफी माँग कर इस देश में सांप्रदायिक ज़हर फैलाने की शर्त पर छूटा था उसकी तस्वीरें कहाँ कहाँ लगीं हैं बताने की आवश्यकता नहीं।

इसी देश में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के हत्यारे नाथूराम गोडसे का मंदिर कहाँ कहाँ बना है यह बताने की आवश्यकता नहीं।

मुद्दे में बस पाकिस्तान-मुसलमान हो , भगवा आतंकियों के लिए इतना काफी है , बाकी चीन रोज़ इस देश को नुकसान पहुंचाता रहे , वहाँ इनके आईकन भीगी बिल्ली बन कर भागे चले जाएंगे , पूरा गिरोह डर कर चुप रहेगा।

- मोहम्मद जाहिद

'भारत का बजट अमेरिका में बनता है' का रहस्य बताने वाले अर्थशास्त्री नहीं रहे

किस तरह अमेरिका के नेतृत्व में विश्वव्यवस्था अपने दलालों को भारत का वित्तमंत्री और प्रधानमंत्री बनाती है, इसका खुलासा डॉ. अशोक मित्र ने ही किया था...उन्हें याद कर रहे हैं सामाजिक कार्यकर्ता और वरिष्ठ पत्रकार पलाश विश्वास

लाल सलाम कामरेड। दक्षिण कोलकाता के एक निजी अस्पताल में जीवित किंवदन्ती प्रख्यात अर्थशास्त्री,समाज विज्ञानी डॉ.अशोक मित्र का निधन हो गया।

कोलकाता से बाहर रहने की वजह से लंबे समय से उनसे मुलाकात नहीं हो पायी। वृद्धावस्था और अस्वस्थता के बावजूद मरण पर्यंत अपनी विचारधारा और सामाजिक सरोकारों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता अटूट रही है।

कोलकाता के तमाम जीवन्त विमर्श में उनकी उपस्थिति लगभग अनिवार्य रही है। वे पार्टीबद्ध नहीं थे, न ही उनका कोई पाखंड था।

उन्होंने हमेशा दोटूक शब्दों में सच को सच कहा है और इसलिये वे सत्ता वर्ग की आंखों की किरकिरी बने हुए थे। उन्होंने बंगाल के तमाम स्वनामधन्य मनीषियों की तरह सत्ता से अपना टांका कभी नहीं जोड़ा।

अशोक मित्र न सिर्फ कामरेड ज्योति बसु के पहली वाम मोर्चा सरकार के वित्तमंत्री थे, बल्कि वे इंदिरा गांधी के राष्ट्रीयकरण आधारित समाजवादी दौर के मुख्य आर्थिक सलाहकार भी थे।

अर्थशास्त्री वे जितने बड़े थे, उससे भी बड़े वे समाजशास्त्री थे। अद्भुत लेखक थे वे उनकी आत्मकथा पैरोट्स टेल में उन्होंने भारत विभाजन और मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था के मूल में साम्राज्यवादी सामंती माफिया गठजोड़ का पर्दाफाश किया है।

उन्होंने पहली बार बताया कि भारत का बजट किस तरह अमेरिका में बनता है और किस तरह अमेरिका के नेतृत्व में विश्वव्यवस्था अपने दलालों को भारत का वित्तमंत्री और प्रधानमंत्री तक बनाता है।

उदारीकरण के लिए विश्वबैंक के अर्थशास्त्री मनमोहन सिंह के वित्तमंत्री के रुप में नियुक्ति का उन्होंने खुलासा किया है। न उनके खिलाफ कोई मानहानि का मुकदमा चला न उन्होंने आज के क्रांतिकारियों की तरह माफी मांगी और न मनमोहन सिंह जैसे लोगों ने उनके दावे का कोई खंडन किया।

कामरेड ज्योति बसु के मंत्रिमंडल से उनके इस्तीफे को भारत में वाम विचलन का निर्णायक मोड़ कहा जा सकता है। जिस वर्चस्ववाद और पाखंड की वजह से भारत में वाम आंदोलन के विघटन से मेहनतकश बहुसंख्य आम जनता के हक हकूक की लड़ाई सिरे से खत्म हो गयी, उसका शायद पहली बार विरोध डॉ. अशोक मित्र ने ही किया था।

लेकिन परिवर्तन के नाम मौकापरस्ती का रास्ता न अपनाकर वे बाहैसियत एक लेखक और सामाजिक कार्यकर्ता बतौर आजीवन सक्रिय रहे और करीब चार दशकों में एक बार भी राजनीतिक मौकापरस्ती का रास्ता नहीं चुना।

सत्ता वर्ग ने इसीलिए हमेशा उनकी उपेक्षा की। हम उनसे विस्तृत बातचीत करना चाहते थे, लेकिन अपनी पत्नी के निधन के बाद वे बातचीत करने की स्थिति में नहीं थे।

उन्होंने वादा किया था कि फिर कभी बात करेंगे। वह बातचीत अब कभी नहीं हो सकेगी इसका अफसोस है। रचनात्मकता ही प्रतिरोध का सबसे मजबूत हथियार है, ऐसा उन्होंने अपनी करनी और कथनी से साबित किया है।

बाबाजी को भी होता है...!

बाबाजी* सिक्योरिटी* में बैठकर कहते हैं कि, *जीवन-मरण ऊपरवाले के हाथ में है...! *अंधभक्त* श्रद्धा से सुनते हैं..., *पर, वे सोचते नहीं हैं...!

बाबाजी* *दौलत के ढेर पे बैठकर* बोलते हैं कि, *मोह-माया छोड़ दो...!* और, *उत्तराधिकारी अपने बेटे* को ही बनायेंगे...! *अंधभक्त* श्रद्धा से सुनते हैं...! *पर, वे सोचते नहीं हैं....!

***भक्तों* को लगता है कि, उनके *सारे मसले बाबाजी हल* करते हैं, लेकिन, जब *बाबाजी मसलों में फंसते* हैं, तब बाबाजी *बड़े वकीलों की मदद* लेते हैं...!**

अंधभक्त* बाबाजी के लिये दुखी होते हैं..., *लेकिन, सोचते नहीं हैं....!

भक्त *बीमार होते* हैं... *डॉक्टर से दवा* लेते हैं...! जब *ठीक हो जाते* हैं तो, कहते हैं, *बाबाजी ने बचा लिया...!*

जब *बाबाजी बीमार होते* हैं तो, *बड़े डॉक्टरों से महंगे अस्पतालों* में *इलाज़ करवाते* हैं...!

अंधभक्त* उनके **ठीक होने की दुआ* करते हैं..., *लेकिन, सोचते नहीं हैं...!

***अंधभक्त* अपने *बाबा को भगवान* समझते हैं...उनके *चमत्कारों की सौ-सौ कहानियां* सुनाते हैं...! लेकिन, जब *बाबा किसी अपराध में जेल* जाते हैं, तब वे *कोई चमत्कार* नहीं दिखाते...! तब, *अंधभक्त, * बाबा के लिये *लड़ते-मरते* हैं,**

लेकिन, वे कुछ सोचते नहीं हैं...!

***इन्सान आंखों से अंधा* हो तो, उसकी *बाकी ज्ञानेंद्रियाँ* ज़्यादा *काम करने* लगती हैं...! लेकिन, *अक्ल के अंधों* की कोई भी ज्ञानेंद्री काम नहीं करती...!**

अतः तार्किक बनो...अक्ल के अंधे नहीं...